स्वतंत्र भारत में जन्म लेनेवाली युवा पीढ़ी भाग्यशाली : बलबीर

जागरण संवाददाता, रांची: विभाजन के प्रत्यक्ष साक्षी पद्मश्री बलबीर दत्त ने अपने अनुभवों का एक मार्मिक वृत्तांत साझा किया। रावलपिंडी में जन्मे दत्त ने विभाजन त्रासदी के दौरान सहन की गई पीड़ा और मानव विस्थापन की स्मृतियां साझा कीं। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी स्वतंत्र भारत में जन्म लेने के लिए भाग्यशाली है, जबकि उनकी पीढ़ी ने स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता को प्रत्यक्ष रूप से देखा है। उन्होंने जलियांवाला बाग जैसी त्रासदियों को याद करने और "विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस" मनाने की शुरुआत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दिया।

दत्त ने बताया कि विभाजन के दौरान लगभग 15 से 20 लाख लोगों की जान गई और 1.5 करोड़ लोग बेघर हो गए। वे गुरुवार को डोरंडा कालेज में आयोजित "विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस" पर बोल रहे थे। उन्होंने 15 अगस्त 1947 की सुबह का उल्लेख किया, जब लाहौर से अमृतसर जाने वाली एक ट्रेन केवल शवों से भरी हुई पहुंची। दत्त ने विभाजन को ब्रिटिश साम्राज्यवादी षड्यंत्र का परिणाम बताया, जिसमें

देश के विभाजन के लिए कौन जिम्मेदार था, आलोचनात्मक जांच आवश्यक: डा. संजय झा

उस समय की राजनीतिक चालबाजियों का समर्थन था। उन्होंने चेतावनी दी कि आज के वैश्विक व्यापार युद्धों में भी ऐसी ही रणनीतियां दिखाई दे रही हैं। अपने लेखों का हवाला देते हुए, दत्त ने ब्रिटिश अधिकारियों और मोहम्मद अली जिन्ना के बीच पत्राचार का उल्लेख किया, जिसमें कहा गया था कि बिना रक्तपात के पाकिस्तान का निर्माण संभव नहीं है।

"विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस" हर वर्ष 14 अगस्त को मनाया जाता है, ताकि उन लाखों लोगों के साहस और बलिदान को सम्मान दिया जा सके। रांची विवि के कुलपति डा. डीके. सिंह ने छात्रों से इतिहास से सीखने का आग्रह किया।

डोरंडा कॉलेज में गुरुवार को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाया गया।

हमारी शक्ति विविधता में निहित एकता में है:डॉ सिंह

रांची, वरीय संवाददाता। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय केंद्र ने डोरंडा कॉलेज के सहयोग से गुरुवार को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर व्याख्यान और प्रदर्शनी का आयोजन किया। मुख्य अतिथि रांची विवि के कुलपति डॉ धर्मेंद्र कुमार सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में निहित एकता में है। धार्मिक घृणा को बढ़ावा न देने की सलाह दी। विभाजन के साक्षी रहे अतिथि पद्मश्री बलबीर दत्त ने अपने अनुभवों का एक मार्मिक वृत्तांत छात्रों के साथ साझा किया।

रावलपिंडी में जन्मे बलबीर दत्त ने कहा कि जहां युवा पीढ़ी स्वतंत्र भारत में जन्म लेने के लिए भाग्यशाली हैं, वहीं उनकी पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता को प्रत्यक्ष रूप से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।